म.प्र. में ग्रामीण युवाओं हेतु रोजगार–भावी विनियोग पर पुर्नविचार

*डॉ. अंजना जैन

भारत गाँवों को देश है भारत की 67.14 प्रतिशत जनता जीवन यापन के लिये कृषि पर निर्भर है। पुंजी का अभाव तकनीकी ज्ञान का अभाव निर्धनता भूमि का उप विभाजन उप खण्डन आदि ने ग्रामीण बेरोजगारी के प्रतिशत को काफी बढा दिया है। बेरोजगारी अल्प बेरोजगारी मौसमी बेरोजगारी के सबसे ज्यादा शिकार ग्रामीण युवा है। जब तक इस देश के विकस की परिकल्पना नहीं की जा सकती है और देश के आर्थिक विकास हेतु बनाई गई किसी भी योजना में भारतीय कृषि ग्रामीण क्षेत्र व ग्रामीण युवा व रोजगार इन पर विचार नहीं किया जायेगा तब तक भारत के विकास की योजना अधुरी रहेगी। कोई भी देश तब तक तरक्की नहीं कर सकता जब तक वह विकास का सपना युवा कन्धों पर नहीं डाल देता अतः इस अध्ययन की उद्देश्य म.प्र. के ग्रामीण युवा हेतुः–

उद्देश्य :–

1. अध्ययन में दिये गये सुझावों के आधार पर ग्रामीण युवाओं को सफलतापूर्वक रोजगार की तरफ अग्रसर किया जा सकता है।

2. यह अध्ययन बताता है कि ग्रामीण युवा के लिये निपूर्णता व रोजगार दोनों पर्याप्त नहीं है बल्कि उन्हे अपने उद्देश्य प्राप्त के लिये ऐसी तकनीकी समझाना जिससे उनमें आत्म निर्भरता के साथ कुछ कर गुजरने का जज्बा पैदा हो उन्हे प्रेरित किया जा सके।

ग्रामीण युवाओं की वर्तमान स्थिति –

विश्व के करीब 1 बिलीयन युवा है (15 से 24 वर्ष) उनमें से 85 प्रतिशत युवा विकासशील देशो में रहते है। भारत की कुल जनसंख्या 1,027,015,247 के लगभग है उसमें ग्रामीण जनसंख्या 7,41,660,293 है।

– भारत में ग्रामीण जनसंख्या 741,660,293 के लगभग है।
– ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत 75.11 प्रतिशत है।
– ग्रामीण जनसंख्या में युवाओं का प्रतिशत 52.10 प्रतिशत है।
– गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले ग्रामीण परिवारों का प्रतिशत – 40 प्रतिशत है।
– भारत के 41 प्रतिशत युवा बेरोजगार है।

तालिका 1,2 व 3 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि म.प्र. में अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। उसमें से केवल 50.12 प्रतिशत युवा ग्रामीण रोजगाररत् है। उनमें से भी अधिकांश अल्पबेरोजगारी, मौसमी बेरोजगारी के

तालिका नं. 1

भारत व म.प्र. में जनसंख्या की स्थिति

देश/प्रदेश	कुल जनसंख्या	पुरूष	महिला	ग्रामीण	शहरी
भारत	1027015247	531277078	495738169	741660293	285354954
म.प्र.	60385118	31456873	28928245	44282528	16102590

Source - Primary Census Astoact census of India 2001

तालिका नं. 2

भारत व म.प्र. में श्रमशील जनसंख्या

देश/प्रदेश	कुल श्रमिक जनसंख्या	ग्रामीण श्रमिक	युवा श्रमिक प्रतिशत	कृषि श्रमिक	प्रतिशत
भारत	402234724	127312851	–	106775330	25.5
म.प्र.	25793519	11037906	50.12 प्रति.	7400670	28.7 प्रति.

Source - census of India 2001

तालिका नं. 3

सन् 2001 में भारत व म.प्र. में शिक्षा कर

भारत	म.प्र.	ग्रामीण क्षेत्र	पुरूष	महिला
ग्रामीण (उम्र 15 से 24)	71.40 प्रतिशत	46.70 प्रतिशत		
शहरी (उम्र 12 से 24)	86.70 प्रतिशत	73.20 प्रतिशत	87.03 प्रतिशत	71.01 प्रतिशत
कुल	75.85 प्रतिशत	54.16 प्रतिशत	76.01 प्रतिशत	50.03 प्रतिशत

Source - census of India 2001

*प्राध्यापक–अर्थशास्त्र शा.म.ल.बा.क.महा.वि. किला भवन, इन्दौर

शिकार है या अपनी योग्यतानुसार उन्हें काम उपलब्ध नहीं हो रहा है। मात्र 28.7 प्रतिशत लोग कृषि श्रमिक का कार्य कर रहे है। कई ग्रामीण युवा अपनी उच्च क्षमताओं के बावजूद उद्देश्य प्राप्ति में असमर्थ है। इसका मुख्य कारण बेरोजगारी, गरीबी, भूखमरी, निम्न स्वास्थ्य तथा जो शिक्षा व प्रशिक्षण उन्हे गाँवों में मिलता है, वह निम्न स्तर का होता है। उद्देश्य रहित शिक्षा व असंबंधित ट्रेनिंग के अलावा भी ऐसी कई रूकावटे है जो ग्रामीण युवा बेरोजगारी के लिए उत्तरदायी है। जैसे –

– सहायोगी व्यस्थापन व माहौल का अभाव।
– सामाजिक बंधन जातिवाद व पारंपरिक मूल्य।
– पूंजी का अभाव।
– भष्टाचार ।
– रोजगार निर्माण की तुलना में जनसंख्या में तेजी से बढोतरी।
– इच्छित व योग्यतानुसार उच्चकोटी की नौकरी उपलब्ध नहीं।
– योग्यता से कम वेतन मिलता है।
– सम्मान जनक रोजगार नहीं मिलता है। कार्य की दशा असुविधाजनक गाँवों में रोजगार के अभाव में शहरी आकर्षण ने युवा को शहरों की तरफ पलायन कराने को बाध्य किया परन्तु प्रशिक्षण व निपूर्णता के अभाव में शहरों में भी इनके लिये रोजगार की अवसर कम रहता है। इससे ये सुवा गरीबी व बेरोजगारी की वजह से ड्रग्स, अपराध, अनैतिकता की तरफ प्रवृत्त होते है या इनका शेषण होता है। ग्रामीण युवा बचपन से ही रोजगार में लग जाते है। अतः अपर्याप्त शिक्षा, गरीबी, अज्ञानता ने ग्रामीण युवा के शारीरिक व मानसिक शोषण में बढौती की है इसका परिणाम कम मजदुरी, अधिक धण्टे कार्य।

ग्रामीण युवा, बेरोजगारी, आतंकवाद व अपराध – गरीबी, बेकारी, भूखमरी से ग्रस्त युवा रातोरात अमीर बनने की चाह से अपराध जगत की तरफ आकर्षित हो जाते है या धार्मिक उन्माद फैलाने वाले धर्म के लिए ''मरने पर जनत नसीब होगी'' व जिने पर ''उज्जवल भविष्य'' के सपने दिखाकर आंतकवादी बनाया जाता है । इसका उदाहरण आसाम में 50 प्रतिशत युवा बच्चे माओ आतंकवादी है। उसमें से 10 प्रतिशत लडकिया है। नागालैण्ड, आन्ध्रप्रदेश में भी यह प्रतिशत 45 से 50 तक है। लिट्टे में 60 प्रतिशत बच्चे (9 से 18 के मध्य) पकडे गये। म. प्र. में भी अपराध जगत में युवाओं का प्रतिशत बढता जा रहा है।

(ग्रामीण युवा के भविष्य के लिये पुर्नविचार)

विश्व के बदलते परिदृश्य विश्वव्यापीकरण, शहरीकरण, औद्योगिकरण, कृषि क्षेत्र का एक जगह रूकना, ग्रामीण वातावरण का दुषित होना इन सभी स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए भारत व म.प्र. में वर्तमान योजनाओं व कार्यक्रमों में बदलाव लाना होगा। जिससे ग्रामीण युवा को अधिक अवसर मिल पाए व रूकावटों को पार कर जाये। इस हेतु निम्न बिन्दुओं पर विचार करना होगा।

विश्वव्यापारीकरण के बदलाव के साथ कदम मिलाकर चलना :

1. आर्थिक, राजनैतिक, तकनीकी, सामाजिक गतिविधियां, अविष्कार आदि बदलाव बढाना व विश्व का सिमट कर अंतर संबंधित होना एक जगह के परिणामों का प्रभाव पुरे विश्व पर पडा है।

और युवा इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होते है हमारे देश व प्रदेश के युवा भी इस बदलाव को लाने वाले प्रहरी हो सकते है। इस विश्वव्यापीकरण से

– ई चौपाल का विस्तार करना।
– टेली कम्युनिकेशन इन्टरनेट दुरस्थ शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण युवा को उच्च कोटी की शिक्षा व प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
– सांस्कृतिक विभिन्नता में कभी आ रही है।
– नई स्थिति में शिक्षा ज्ञान व प्रशिक्षण के तीनों ग्रामीण युवा के लिये आवश्यक है।
– टेलीविजन व फिल्मों के माध्यम से स्वीकार करने की भावना आने से विश्व व्यापीकरण में मदद।
– विश्वव्यापी मीडिया ने युवा को जागरू किया व अपने आपको प्रस्तुत करने का मौका दिया। अतः हम अपनी सोशल कास्ट को न बिगाडते हुए ज्यादा से ज्यादा अवसरों का लाभ ले।

2. कृषिगत नीतियों पर पुनर्विचार

हमारे देश व प्रदेश की जो कृषिगत नीतियां व संरचनात्मक ढांचा है उसमें सुधार लाना होगा। 50 प्रतिशत विकासशील देश 1/3 भाग कृषि निर्यात से आय प्राप्त करते है। 40 प्रतिशत देश ऐसे है जहां का आकडा 1/2 है इसलिए हमें अपनी कृषि को मजबुत बनाना होगा। जिससे आत्मनिर्भरता के बाद निर्यात कर सके। इससे रोजगार के नये अवसर ग्रामीण क्षेत्रों में बढेगें। इसलिए कृषि उत्पादन बढाने हेतु निम्न बिन्दुओं पर विचार करना होगा।

1. कृषि पर आधारित फैक्ट्रियां बढे किन्तु ग्रामीण परिस्थितिक तंत्र प्रभावित न हो।
2. गरीबी कम हो किन्तु सामाजिक बदलाव बाधित हो।
3. ऐसी शिक्षा प्रशिक्षण युवा को दिलवाना जो रोजगार के नये अवसर प्रदान करें उच्च उत्पादन क्षमता बढाने में मदद करें।
4. अनुदान देने व लेने वाले दोनों वर्ग के लोगों व संस्था को आवश्यक प्रशिक्षण व तकनीकी जानकारी देना।

कृषि में नई जान देने हेतु सहायता व तकनीकी मदद तथा

पुर्नरूत्थान के फैक्टर्स

– अधिक मूल्य वाली खाद्य फसलों के उत्पादन और विक्रय को बढावा देना।

– अच्छी स्वास्थ्य सेवा व शिक्षा उपलब्ध करवाना।

– अच्छे रोड, सिचाई की व्यवस्था हो, स्कुल अस्पताल, बिजली व संचार सुविधाओं को गाँवों में बढाना।

– नई फसलो व उन्नत किस्म के लिये शेध केन्द्र बढाना।

– रोजगार व आय के लिये ज्यादा से ज्यादा मजदुरी पर आधारित फैक्ट्रिया डालना।

– कृषकों को इकठ्ठा कर सकें व उनके मध्य समन्वय संस्थापित कर सकें ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहन देना।

– ग्रामीण युवा कृषकों को आसान ऋण उपलब्ध करवाना जमीन पर मालिकाना हक व वितरण पर ध्यान रखना।

3. ग्रामीण युवा के शहरी पलायनवाद को रोकना

ग्रामीण युवा अनेक कारणों से शहरों की तरफ आकर्षित होते है किन्तु उसमें गरीबी व बेरोजगारी सबसे बडा कारण है शहरों में चले तो जाते है पर निम्न शिक्षा व पर्याप्त प्रशिक्षण के अभाव में शहरों मेें निम्न जीवन स्तर पर पहुंच जाते है। ग्रामीण गरीबी वातावरण में जो बदलाव हो रहा है उसमें काफी सह संबंध है। इसमें गरीबी कारण व प्रभाव दोनों है। पानी की कमी व सुखे से गांव उजर रहे है। अतः पर्यावर्णीय कार्यक्रम तकनीकी शिक्षा व पुंजी लगाई जाय तो इनका भविष्य उज्जवल हो सकता है इस हेतु –

1. पुनः जंगल लगाना, 2– सोच समझकर पानी का प्रयोग करना, 3– तालाब बनाना, 4– जलाउ लकडी का कम प्रयोग करना व इनका अल्टर ढुंढना होगा। 5– जमीन का सही तरीकों से उपयोग करना होगा।

4. युवा में विनियोग –

किसी भी राष्ट्र का वर्तमान व भविष्य युवा पर निर्भर करता है। शिक्षित व प्रशिक्षित जनसंख्या आ. व सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण युवा को दो तरीकों से देखा जा सकता है। अ– विनियोग अपारचुनीटीज ब–विकास कार्यक्रमों में सहभागिता। ग्रामीण युवा में सीधे विनियोग होना चाहिये। इसके लिए जीवनस्तर को उठाना और उनकी उत्पादन क्षमता को बढाना। इस हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु है।

– रोजगार गारंटी शिक्षा देना।

– श्रम कानून मेें बच्चे व युवा को सुरक्षा प्रदान करना।

– ग्रामीण युवा की शिक्षा व प्रशिक्षण का पुर्नरूत्थान।

– निपूर्णता व दक्षता को बढाने वाली ट्रेनिंग देना।

– प्राथमिकता ऋण योजना।

– बाल श्रम नियंत्रण व युवा भटकाव को रोकना। गरीबी के दुष्चक्र को तोडने हेतु शिक्षा।

– इन्टरनेट ने आवागमन की बाधार को तो दूर कर दिया है किन्तु आर्थिक व भाषा ज्ञान की बाधा अभी भी है उसे दुर करना।

– सैद्धान्तिक शिक्षा के स्थान पर व्यवहारिक शिक्षा प्रणाली लागू करना अन्यथा शिक्षा औचित्यहीन।

तकनीकी शिक्षा विकास, ग्रामीण आवश्यकता के अनुरूप, श्रम प्रधान, कम लागत वाली व भारतीय पर्यावरण के अनुरूप हो।

5. (युवा रोजगार के अवसर)

1. कृषि विस्तार के कार्यक्रमों में युवाओं को प्रेरित करना व प्रोत्साहित करना।
2. युवा कृषक बनाने का लक्ष्य।
3. स्कुल स्तर पर ही पालकों को अपने बच्चों को खेती करने हेतु जमीन सौंपना।
4. व्यवसायिक दृष्टिकोण विकसित करना।
5. नेतृत्व और संगठनात्मक क्षमता का प्रशिक्षण देना।
6. ग्रामीण युवा को पर्याप्त पुंजी उपलब्ध करवाना।
7. कृषि को अर्थ व्यवस्था की मुख्य धारा से जोडना।
8. शिक्षा प्रशिक्षण की व्यवस्था करना। सहयोग देने वाले त्तवों को जोडना।

संदर्भ सूची :–

1. Integrated Rural Development Programme and National Rural Employment Programme - Dr. S.C. Jain page No. 148
2. योजना 2001
3. UNDP-Human Development Report 2003
4. Primary Census Abstract Censurs of India 2001 R. 3.6.
5. आर्थिक समिक्षा
6. Economic Survey (2001-02)
7. Registrar General, India.